''राजस्थान संस्कृति''

रश्मि कुमावत **डॉ प्रेमलता गाँधी**

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डिम्ड)
विश्वविद्यालय प्रतापनगर उदयपुर

संस्कृति का अर्थ एवं परिभाषाएँ

संस्कृति का अर्थः–

संस्कृति का सामान्य अर्थ संस्कारों से लिया जाता है। संस्कृति में उन समस्त परम्पराओं एवं विचारों को कला एवं साहित्य के द्वारा प्रदर्शित किया जाता है जो उस समाज में उपस्थित रहती है क्योंकि मानव का मस्तिष्क जो सोचता है जो वाणी के द्वारा प्रकट करता है एवं जो अपने हाथों से सृजित करता है उसका संयुक्त रूप संस्कृति के नाम से जाना जाता है। संस्कृति का मूल संबंध मानवीयता एवं नैतिकता से होता है।

संस्कृति एक बहती हुई नदी है न जाने कितने नदी नाले अपनी अस्मिता खोकर लीन हो जाते है। और महानदी जन जीवन में रस घोल देती है। संस्कृति अपनी प्राचीन परम्परा, विविध संस्कृतियों के संगम तथा अनेक कलात्मक अवदानों के कारण आज राजस्थान के सांस्कृतिक परिदृश्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

हमारे जीवन में संस्कृति पर्वो एवं त्योहारों में अनेक कथा एवं कहानियां बिखरी पड़ी है। जीवन में संचित अनुभवों को प्रतीक के माध्यम से इन कहानियों को व्यक्त किया जाता है।

इन पर्वों एवं त्योहारों की रोचक प्रस्तुती ही इन्हें जीवन्त बनाती है एवं समाज में मूल्यों का संचार करती है। बालकों के मन पर कहानी पर अमीट प्रभाव पड़ता है। वे कहानियां सुनने में अधिक रूचि लेते है। हमारी संस्कृति कथानक ऐसे है जिन्हें संसोजकर कथा कहानियां बनाई गई है। जिनके माध्यम से विभिन्न आयोगों में वर्णित मूल्यों की शिक्षा दी जा सकती है।

इन त्योहारों की कथा कहानियों के माध्यम से विद्यार्थियों में ये मूल्य विकसित किये जा सकते है।

राजस्थान राज्य में मूल्यों को अधिक महत्व दिया जाता है। मूल्यों से मानव जीवन शांतिपूर्ण, स्थायित्व, आध्यात्मिक कल्पनात्मक अभिव्यक्ति से ओतप्रोप होता है।

इसके लिए समय–समय पर सभी त्योहारों को आनन्दपूर्वक पूर्ण हर्षोल्लस के साथ मनाया जाए जिससे मानव जीवन सुखमय एवं आनन्दमय रहे।

राजस्थान राज्य में किसी भी समुदाय या धर्म का अवलोकन करने से विदित होता है कि लगभग सभी धर्मों एवं समुदायों में इस प्रकार के मूल्यों को महत्व दिया जाता है। ईश्वर की प्रार्थना प्रतिदिन की जाती है सभी व्यक्ति अपना दैनिक कार्य आरम्भ करने से पूर्व सूक्ष्म प्रार्थना करते है। घर तथा परिवारों में प्रातः तथा सांयकाल को लागू पूजा अर्चना करते है। मूल्य मानव जीवन की सार्थकता है, उनका धर्म है एवं उनका अस्तित्व है। मूल्यों का ज्ञान एवं आचरण हमारे लिए आवश्यक है। हमारे लिए मूल्यों का ज्ञान की पर्याप्त नहीं बल्कि मूल्यों को आचरण में लाना अधिक महत्वपूर्ण है।

जीवन की सार्थकता को खोजकर उसको प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। मूल्य जीवन के अंतिम लक्ष्य होते है। इसलिए मूल्य परक होनी आवश्यक है। सुकरात का कहना था कि ज्ञान की सद्गुण है अर्थात् यदि उचित मूल्यों की जानकारी बालकों कोदेदी जाए तो बालकों में निस्संदेह सद्गुण आ जाएगा। सुकरात का विश्वास था कि मूल्यों की शिक्षा देकर व्यक्ति को उत्तम बनाया जा सकता है।

संस्कृति मूल्यों की प्रमुख स्त्रोत है। मनुष्य आज जो चेतन है वह संस्कृति की देन है। मनुष्य से यदि संस्कृति दूर हो जाए तो वह हीन प्राणी पशुवत बन जायेगा। संस्कृति के कारण ही मनुष्य में मनुष्यता के गुण विद्यमान है। संस्कृति मनुष्य के भूत, वर्तमान, भविष्य का सर्वागपूर्ण प्रकार है। हमारे जीवन का ढंग हमारी संस्कृति है। साधारण बोलचाल में संस्कृति का अर्थ सुन्दर परिष्कृत, रूचिकर या कल्याणकारी व्यवहार या गुणों से लिया जाता है।

संस्कृति की विभिन्न परिभाषाएँ

- **मैकाइवर और पेज के अनुसार–** *''यह मूल्यों शैलियों, भावात्मक लगावों तथा बौद्धिक अभियानों का क्षेत्र है। इस तरह संस्कृति सभ्यता का बिल्कुल प्रतिवाद है। वह हमारे रहने और सोचने के ढंगों में, दैनिक कार्य–कलापों में, कला में, साहित्य में, धर्म में मनोरंजन और सुखोपभोग में हमारी प्रकृति की अभिव्यक्ति है।''*
- **प्रो.एस. के दुबे के अनुसारः–** *''संस्कृति का आशय मानव समाज की उन रीति–रिवाज परम्पराओं, नैतिकता, मानवता एवं कला से संबंधित सम्पूर्ण व्यवस्था से है जो कि व्यावहारिक एवं क्रियात्मक रूप से प्रतिबिम्बित होती है।''*
- **ई.वी. टाइलर के अनुसारः–** *''सांस्कृति वह जटिल समग्रता है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, प्रथा, योग्यताएं और आदतें सम्मिलित है, जिनको, मनुष्य समाज के सदस्य के रूप में प्रस्तुत करता है।''*
- **गांधीजी के अनुसारः–** *सांस्कृति मानव जीवन की आधार शिला और प्रारम्भिक वस्तु है। वह हमारे आचरण और व्यक्तिगत व्यवहार की छोटी से छोटी बातों को परिवर्तित करती है।*
- **सदरलैण्ड एवं वुडवर्ड के अनुसारः–** *''संस्कृति में कोई भी तथ्य आ सकता है जिसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित किया जा सकता है।''*
- **जेएफ ब्राउन के अनुसारः–** *संस्कृति किसी समुदाय के सम्पूर्ण व्यवहार का वह ढांचा है जो अशंतः भौतिक पर्यावरण से अनुकूलित होता है। यह पर्यावरण प्राकृतिक एवं विचारधाराओं, प्रवृत्तियों, मूल्यों एवं आदतों द्वारा अनुकूलित होता है, जिनका विकास समूह द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया जाता है।*

इस प्रकार संस्कृति में वह सब सम्मिलित है जो मानव ने अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के मानसिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में आज तक अर्जित किया है। इस प्रकार संस्कृति कोई एक तत्व नहीं बल्कि व्यापक रूप में है। संस्कृति किसी एक मनुष्य की नहीं बल्कि समाज की देन है संस्कृति अपने आप में व्यापक रूप में फैली हुई है। मनुष्य, संस्कृति और मूल्य एक दूसरे पर निर्भर है।

किसी भी राष्ट्र की प्रगति एवं राष्ट्रीय अस्मिता समाज के प्रति व्यक्तिगत दायित्व की भावना सांस्कृतिक विरासत के प्रति चेतना से ही दृढ़ीभूत रहती है। संस्कृति से मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है। संस्कृति के निर्माण एवं संस्कृति के अनुरूप मानवीय मूल्यों के विकास में राजस्थानी संस्कृति एवं त्योहारों का विशेष महत्व है।

संस्कृति की दृष्टि से राजस्थानी संस्कृति गौरवशाली रही है। राजस्थान की संस्कृति और मनाए जाने वाले त्योहारों का मानव के जीवन और मूल्यों पर गहरी छाप है। यह त्योहार संस्कृति को और मजबूत बनाते हैं। मानव अपनी संस्कृति से जुड़ा रहता है। जो उसके मूल्यों को प्रभावित करते है। व्रत–त्योहार तथा उत्सव राजस्थानी जीवन के अटूट अंग है। भले ही इसे पिछड़ेपन, अनपढ़ और अन्धविश्वासी कहा जाता है पर सच तो यह है कि आज भी ये हमारे अन्दर मूल्यों का विकास करते हैं। इससे सामाजिकता का विकास, सामूहिकता, नैतिकता, चारित्रिक मूल्यों, आध्यात्मिक, धार्मिक मूल्यों तथा कलात्मकता के मूल्यों का विकास होता है तथा भारतीय संविधान में वर्णित समानता, स्वतंत्रता, बन्धुत्व, न्याय आदि मूल्यों का पोषण भी इन त्योहारों में समाहित है।